L. N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART - I
PAPER - II
Psychology (Honours)
Topic - Genetic Theories,

Dr. Pramodkumar Sahu,
Assistant - Professor,
Guest Teacher,
V.S.J. College, Rajnagar,
Madhubani (Bihar)
Pramodkumar f.bg 2018 @ gmail. com

इस सिद्धान्त के अनुसार सामाजिक व्यवहार की उत्पत्ति का कारण जैविक रूप से निर्धारित कुछ कारक होते हैं। इस सिद्धान्त द्वारा सामाजिक व्यवहार को समझने में मशहूर कथन व्यक्ति एक सामाजिक पशु है। के कवि की उक्ति अधिक बतलाया गया है। इस सिद्धान्त की मान्यता यह है कि सामाजिक व्यवहार के अधिकतर तत्व जन्मजात जैविक कारणों से सम्बंधित होते हैं। इस सिद्धान्त के एक वरि. समर्थक सिकदोने पशुओं में सामाजिक व्यवहारों का गहन अध्ययन किया था - ने अपने अध्ययन के आधार पर यह बतलाया है कि पशुओं में आक्रमक व्यवहार एक जन्मजात मूलप्रवृत्ति आक्रमक अन्तर्नोद (aggressive drive) जो उनमें आत्म-सुरक्षा (self-preservation) के लिए जीन की आवश्यकता से उत्पन्न होती है, के परिणामस्वरूप होता है।

एक मशहूर आरम्भिक समाज मनोवैज्ञानिक जिनका नाम (William Mc Dougall, 1908) थी ने भी सामाजिक व्यवहार की व्याख्या जैविक विचारों की व्याख्या मूलप्रवृत्ति के रूप में की जा सकती है। जिसे एक जन्मजात लक्ष्य-निर्देशित व्यवहार के रूप में परिभाषित किया गया है। मैकडूगल का मत था कि किसी भी सामाजिक व्यवहार का कारण उसके पीछे छिपे मूल प्रवृत्ति की एक भूमिका होती है। जैसे- एक माँ अपने बच्चे को हर हालत में सुरक्षा देती है क्योंकि उसमें मातृत्व मूलप्रवृत्ति होती है। उसी तरह से व्यक्ति को हमेशा व्यक्ति के साथ रहकर

अध्ययन करना है। क्योंकि उसमें मुख्य मूल प्रवृत्ति मौजूद होता है।

1920 के दशक में मनोविज्ञान में मूलप्रवृत्ति-विरोधी आन्दोलन तेज हो गया और लोगों द्वारा मानव व्यवहार के मूल्यांकन की इस पद्धति को बदलने के लिए आवाज उठायी जाने लगी। परिणामस्वरूप अधिकतर समाज मनोवैज्ञानिक द्वारा मूलप्रवृत्ति को सामाजिक व्यवहार की व्याख्या करने के लिए एक अनुपयुक्त कसौटी कहकर उसे अस्वीकृत कर दिया गया। ऐसे समाज मनोवैज्ञानिकों का मत था कि मूलप्रवृत्ति से किसी सामाजिक व्यवहार की व्याख्या नहीं होती है। बल्कि यह सिर्फ किसी विशिष्ट व्यवहार को मात्र एक वैकल्पिक नाम प्रदान करता है। इतना ही नहीं मूलप्रवृत्ति मानव के व्यवहारों के बारे में कोई ठोस पूर्वानुमान लगाने में मदद नहीं करता है, जो किसी अच्छे सिद्धान्त को करना चाहिए। जननिक सिद्धान्तों में सामाजिक व्यवहार की व्याख्या करने में परिस्थितिजन्य तथा पर्यावरणीय कारकों के महत्व को नजरअंदाज किया गया है।

उक्त सभी परिभाषाओं के बावजूद जननिक सिद्धान्त आज समाज मनोवैज्ञानिकों के बीच समाज-जैव विज्ञान के रूप में उभरकर ही मौजूद है। इस विज्ञान के मूलतः प्रवर्तक विल्सन हैं। जिनके अनुसार समाज-जैव विज्ञान में समाजशास्त्र, मनोविज्ञान तथा जीवविज्ञान के नियमों एवं तथ्यों को लेकर सामाजिक व्यवहार की व्याख्या करता है। समाज जैव विज्ञान की मूल बात इस बात पर है। कि स्वाभाविक चयन की प्रक्रिया के सहारे सामाजिक व्यवहार की

उत्पन्न होते है। ये समस्त समूहों में मानव जाति के कुछ उत्तरजीवितता लाभ प्रदान करते हैं जैसे एक समाज जैव विज्ञानी परोपकारी व्यवहार की व्याख्या परोपकारिता के उत्तरजीविता मूल्य के रूप में कर सकते है। व्यापक परोपकारी व्यवहार मानव जाति के समग्र रूप से व्यक्तियों के जीवन को जीवन को सुरक्षा प्रदान करके उसे उत्तम ढंग से अधिक समय तक जीवित रहने के योग्य बना दिया है अतः जिन व्यक्तियों में परोपकारिता व्यवहार इस तरह से नहीं कहा जा सकता है। कि व्यक्ति का परोपकारी व्यवहार कब और कब अंशतः अवश्य ही व्यक्ति के जननिक कारकों द्वारा निर्धारित होता है।

विल्सन (Wilson) के समाज जैव विज्ञान के सहार यद्यपि सामाजिक व्यवहार की व्याख्या किया है। फिर भी इस उपागम की भविष्यवाणी में कुछ ऐसी ही त्रुटियाँ है। जो जननिक स्थानों में भी इस स्थान में पूर्वकथनीय व्याख्या नहीं है। क्योंकि व्यक्ति भविष्य में किस ढंग की सामाजिक व्यवहार होने की जैव आधिक उपयुक्तता (समावेशी योग्यता), इसका पूर्वानुमान इस स्थल द्वारा नहीं हो पाता है।

आज कल समाज मनोवैज्ञानिकों के बीच इस बात की समग्र सहमति है। कि सामाजिक व्यवहार कोई निश्चित प्रकार का व्यवहार नहीं होता है। और न तो यह मूल प्रवृत्ति कारकों द्वारा पूर्वनिर्धारित होता है।

फिर भी इतना तो वे लोग आज कल स्वीकार करते है। कि सामाजिक व्यवहार की पूर्णरूपेण ज्ञान के लिए जननिक प्रवृत्तियों को ध्यान में रखना जरूरी है। मनोविज्ञान व्यक्तियों के सामाजिक व्यवहार (social behaviour) को व्यवहार के नियमों के माध्यम से समझने की कोशिश करता है। सामाजिक व्यवहार को समझने की मतलब समाज मनोवैज्ञानिक

क्यों (why) यह IV व्यवहार हो रहा है। समाज यह जानना चाहते हैं मनोविज्ञान के सिद्धान्तों द्वारा इस प्रश्न का उत्तर देने की कोशिश की जाती है अतः सिद्धान्त की मदद से समाज मनोवैज्ञानिक द्वारा इस बात का उत्तर ढूंढने का प्रयास किया जाता है कि क्यों अमुक सामाजिक व्यवहार होता है।

(i) एक उत्तम सिद्धान्त आंतरिक रूप से संगत होता है। इसका मतलब यह हुआ कि इस सिद्धान्त से जितने भी प्राक्कल्पनाएं किये जाते हैं वे एक-दूसरे के साथ फिट बैठते हों न कि एक दूसरे के परस्पर विरोधी हो।

(ii) एक उत्तम सिद्धान्त को वर्तमान में मौजूद तथ्यों के साथ संगति दिखलानी चाहिए तथा साथ ही अविष्कार के प्रमाणों के लिए यह उत्तम एवं सूचक होना चाहिए।

(iii) एक उत्तम सिद्धान्त मितव्ययी होना चाहिए। अगर कोई सिद्धान्त ऐसा है जिसकी जरूरत नहीं भी पड़ सकती है तो उसे एक उत्तम सिद्धान्त की श्रेणी में नहीं रखा जाएगा।

Dr. Premanand Kumar Sahu.
Date - 28/08/2020
Sub. Psychology